National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2019; 1(24): 56-58
© 2019 NJHSR
www.sanskritarticle.com

डॉ.भारती कौशल
श्रीलालबहादुरशास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत-विद्यापीठम्,नई दिल्ली

Correspondence:
डॉ.भारती कौशल
श्रीलालबहादुरशास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत-विद्यापीठम्, नई दिल्ली

बालकों के सर्वांगीण विकास में आध्यात्मिक शिक्षा एक सशक्त कदम

डॉ.भारती कौशल

आध्यात्मिक शिक्षा शाश्वत व सार्वभौमिक आध्यात्मिक नियमों व सिद्धांतों पर आधारित है ।यह नियमों की श्रृंखला हर व्यक्ति पर लागू होती है चाहे उसकी जन्मस्थली संस्कृति और धार्मिकता भिन्न-भिन्न हो। व्यक्ति की आत्मा के मूल गुणों का विकास करना ही आध्यात्मिक शिक्षा का लक्ष्य है। आध्यात्मिकता मूलतः व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास की प्रक्रिया है। इसके माध्यम से व्यक्ति अपने अंतर्मन की गाँठों को खोल पाते हैं और अपने जीवन लक्ष्य को प्राप्त कर पाते हैं। आध्यात्मिकता का अर्थ है अपने विकास की प्रक्रिया को तेज कर देना । बालकों के सर्वांगीण विकास का अर्थ है उनका शारीरिक ,मानसिक ,सामाजिक ,नैतिक, भावनात्मक चारित्रिक व आध्यात्मिक विकास । विद्यालयों में अध्यापित किए जाने वाले विषयों के माध्यम से बालकों के ज्ञानात्मक पक्ष का विकास तो संभव है परन्तु वहीं दूसरी ओर बालकों का शारीरिक व मानसिक विकास भी उनके वंशानुक्रम वातावरण से प्रभावित होता परिलक्षित होता है। विद्यालयीय व्यवस्थाओं के द्वारा भी चाहे वह मिड डे मील प्रोग्राम हो या विद्यार्थियों के लिए उपलब्ध कराई जाने वाली शिक्षण सामग्री , इनके द्वारा भी ज्ञानात्मक व मानसिक पक्ष को प्रबल बनाने का प्रयास किया जा रहा है। परंतु विकास के दूसरे पहलू सामाजिक नैतिक चारित्रिक व भावनात्मक आध्यात्मिक पक्षों का विकास नहीं हो पाता है यही कारण है कि आज विद्यार्थियों कि आज विद्यार्थियों में सामाजिक , नैतिक व चारित्रिक मूल्यों में गिरावट दिखाई देती है ।एक ओर शिक्षण व्यवस्था का उद्देश्य सर्वांगीण विकास है तो विद्यार्थियों द्वारा अपने वातावरण (यानि भौतिक,,सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक वातावरण) से समायोजन इसका वांछित परिणाम । शिक्षक को सर्वांगीण विकास के लिए विद्यार्थियों के व्यवहार को समझना होगा तदुपरान्त उनके व्यवहार में परिवर्तन लाना होगा । जब यह परिवर्तन स्थाई रूप से उनके व्यवहार में प्रदर्शित होगा तभी कहा जा सकता है कि बालकों का सर्वांगीण विकास हो रहा है। आध्यात्मिक शिक्षा ही एक ऐसा सशक्त माध्यम है जो बालकों के सर्वांगीण विकास को संभव बना सकता है । बालकों की शिक्षा में हमें उनके चरित्र और उनके दिमाग को विकसित करने में उनकी सहायता करने की आवश्यकता है ,लेकिन हमें उन्हें इस दुनिया में सफलतापूर्वक रहने के लिए तैयार करने में भी मदद करनी चाहिए । शिक्षा प्रणाली ऐसी नहीं होनी चाहिए कि जब बालक समाज में जाए तो सामाजिक प्रणाली के अनुरूप स्वयं को सक्षम पाए। आध्यात्मिक शिक्षा का आधार उन्हें समाज के लिए इस तरह तैयार करना है जो उन्हें आदर्शवादी बने रहने में मदद कर सकता है। आध्यात्मिक शिक्षा लोगों को जीवन के लिए प्रशिक्षित करती है।

आध्यात्मिक शिक्षा

आध्यात्मिक शिक्षा का अर्थ है 'जागरूकता बढ़ाने की कला और सहज ज्ञान तक पहुंचने की क्षमता हासिल करना । यह शिक्षा जीवन का सामना करते समय विचारों भावनाओं पसंद और नापसंद आदि के रूप में खुद की प्रतिक्रियाओं को जानने के साथ शुरू होती है । दूसरे शब्दों में कह सकते हैं आध्यात्मिक शिक्षा आध्यात्मिक ज्ञान हैं स्थूल (साकार) ,सूक्ष्म (निराकार) की समझ और अस्तित्व के पहलुओं को प्रेम और भक्ति के साथ पवित्रता की भावना के साथ शुद्ध प्रकृति के अनुसार काम करने की प्रवृत्ति का विकास है।

ISSN 2454-1230

एकादशोऽङ्कः, XI[th] Issue

जनवरी-जून, 2020

January-June 2020

शिक्षाप्रियदर्शिनी

अन्ताराष्ट्रिया समकक्षव्यक्ति-समीक्षिता

बहुभाषी-षाण्मासिक-शोधपत्रिका

SHIKSHA PRIYADARSHINI

(An International Peer-Reviewed Multi-Lingual)
Half-Yearly Research Journal)

प्रधानसम्पादकः

प्रो. चांदकिरणसलुजा

प्रबन्धसम्पादकः

प्रो. पवनकुमारः

- विधिपरामर्शकः
  श्री विनोदजिन्दलः (अधिवक्ता, तहसीलन्यायालयः, बाड़ी, धौलपुरम्, राजस्थानम्)
- विधिसहपरामर्शकः
  श्री अरुणकुमारमंगल(एडवोकेट)
- प्रबन्धसहसम्पादकः
  श्री गुन्जनपाठकः
- शिक्षाप्रियदर्शिनी
- ISSN : 2454-1230
- एकादशोऽङ्कः– जनवरी- जून, 2020
- © सर्वाधिकाराः प्रकाशकस्य अधीनाः ।
- प्रकाशकः
  संस्कृतसंस्कृतिविकाससंस्थानम्,
  लक्ष्मी विद्यालय के पास भारद्वाज मार्केट,
  बाड़ी, जनपद -धौलपुरम्, राजस्थानम् - 328021
- संस्थानस्य जालपुटम्- www.ssvsanthan.in
- पत्रिकायाः जालपुटम् (website)-www.shikshapriyadarshini.com
- सम्पर्कसूत्रम् - + 91-8905479855, 9555069295,9529208751,08619590069
- अणु-सङ्केतः- shikshapriyadarshini777@gmail.com,shikshapatrika@gmail.com
- सहयोगराशिः लेखकाय तल्लेखान्वितोऽङ्कः निःशुल्कं प्रदास्यते ।
- इयं पत्रिका उभयथा अध्येतुं शक्यते Online &Offline
  संस्थागतसदस्यताशुल्कम् - प्रत्यङ्कम् ६००रू, वार्षिकम् १२०० रू., द्विवार्षिकम् २२०० रू., चतुःवार्षिकम् ४२०० रू, पञ्चवार्षिकम् ५००० रू. ।
- A/C Name : Sanskrit sanskriti vikas sansthan ,Bari
- A/C No: 45640200000541 , IFSC CODE: BARBOBADIXX
- मुद्रणम् -MODERNXEROX,133/3,KATWARIYA SARAI, PHASE -2, NEW DELHI -110016.

सूचनाः –

- पत्रिकायाः समस्तपदाधिकारिणः अवैतनिकाः सन्ति ।
- लेखस्य / शोधपत्रस्य समस्त उत्तरदायित्वं लेखकस्यैव अस्ति ।
- कस्यापि विवादस्य न्यायिकक्षेत्रं तहसीलबाड़ी-धौलपुरम् (राजस्थानम्) भविष्यति ।

अनुक्रमणिका

क्र.	लेखक	पत्रम्	पृ.
1.	Prof. R. Deepta	From Conventional to Radical – the Roles of Some Women Characters in the Mahābhārata	1
2.	डॉ. कैलाशचन्दमीणा डॉ. जगदीशकुमारजाटः	पुराणेषु शिक्षा भक्तिमार्गस्य वैशिष्ट्याधानाय आख्यायिकायाः स्थानं कथं वर्तते?	8
3.	डा. देशबन्धुः जगदीशकुमारः	वास्तुशास्त्रपरम्परायां प्राचीनाऽर्वाचीनमतानुसारं मृत्तिकापरीक्षणम्	16
4.	डा.वीरेंद्र सिंह बर्त्वाल	प्रेमचंद की कहानी 'सद्गति' में सामाजिक यथार्थ	25
5.	डा. आरती शर्मा	संज्ञानात्मकमनोविज्ञानस्य विधयः	29
6.	डा. सुरेश शर्मा	विवाह मेलापक में नाडी दोष विचार	33
7.	डा. सुनील कुमार शर्मा	हिन्दी शिक्षण में अनुवाद का स्वरूप एवं महत्त्व	37
8.	डॉ. सुषमा चौधरी	संस्कृत एवं अवधी का अंतः संबंध-रामचरितमानस के परिप्रेक्ष्य में	40
9.	डा. अजय कुमार	कोरोना काल में बदलते जीवन मूल्य और भारत की भूमिका	44
10.	डा. नितिनकुमारजैनः रेनू	परास्मृतिः, तत्सम्बद्धानां शोधकार्याणां पराविश्लेषणञ्च	51
11.	डा. भारती कौशल	शिक्षकों में व्यावसायिक विकास के लिए सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी की भूमिका	56
12.	डॉ अखिलेश कुमार त्रिपाठी	श्रीमद्भागवद्गीता में निहित ज्ञान योग का शैक्षिक विश्लेषण	63
13.	स्वाती लोडे	पाणिनीयव्याकरणे नियमसूत्रविमर्शणम्	67
14.	खुशबू कुमारी	स्फोटतत्त्वविमर्शः	71
15.	गुंजन पाठक	भारतीयपरिप्रेक्ष्य में प्रतिभा एवं क्षमता	74
16.	वेणुधरदाशः	वैदिकवाङ्मये कृषिविज्ञानम्	78
17.	अभय तिवारी	भारतीय परिप्रेक्ष्य में आध्यात्मिकबुद्धि तथा शिक्षा	83
18.	अभिनवशर्मा	लकारार्थविमर्शः	86
19.	सुशील कुमार	सेवापूर्व अध्यापक की जीवन शैली एवं शैक्षिक	89

* * *

11.

शिक्षकों में व्यावसायिक विकास के लिए सूचना एवं सप्रेषण तकनीकी की भूमिका

डा. भारतीकौशल
सहायकआचार्या (अनुबन्धित)
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ ,नई दिल्ली

सारांश

आज जहाँ बाल केन्द्रित शिक्षा की बात की जा रही है वही सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को शिक्षार्थी केन्द्रित बनाने में आई.सी.टी. के महत्वपूर्ण भूमिका है। वर्तमान युग आईसीटी का युग है, जो प्रायः 'सूचना एवं संचार का युग' के नाम से पुकारा जाता है। सूचना एवं सम्प्रेषण एक ऐसी अवधारणा है, जिसमें तकनीकी आधारित संचार से सम्बन्धित प्रणाली, प्रक्रियाएँ तथा व्यक्ति शामिल हैं। सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी विभिन्न प्रकार के तकनीकी यंत्रों एवं संसाधनों की ऐसी व्यवस्था है, जिसका अनुप्रयोग सूचना के संग्रहण, भण्डारण, पुनः प्रस्तुतीकरण, उपयोग, स्थानान्तरण, संश्लेषण व विश्लेषण एवं संचारण हेतु किया जाता है। शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में शिक्षक एक धुरी है। जिसके द्वारा छात्रों का सर्वांगीण विकास सम्भव है। वर्तमान समय में आधुनिक संसाधनों के अनुप्रयोग के बिना शिक्षा के दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक व समाजिक उद्दश्यों की प्राप्ति कठिन है। सूचना एवं संचार तकनीकी में शिक्षा क्षेत्रा को तीव्र गति से प्रभावित किया है। सूचना एवं संचार तकनीकी के विभिन्न साधनों का शिक्षा के क्षेत्रा में उपयोग बढ़ा है। शिक्षा व्यवस्था में अध्ुनिकता एवं सुधर का प्रवाह हुआ है। शैक्षिक गुणवत्ता को मद्देनजर रखते हुए शिक्षक के व्यावसायिक विकास में आईसीटी की महती भूमिका है। शिक्षक का प्रभावी व्यावसायिक विकास यथासम्भव कक्षा के वातावरण के अनुरूप होना चाहिए। जिसे आईसीटी द्वारा सम्भव बनाया जा सकता है। आईसीटी को सीखने की प्रक्रिया का महत्वपूर्ण घटक माना जा सकता है। जहाँ आज के युग में स्मार्ट क्लास व वर्चुअल क्लास की बात की जाती है वहाँ शिक्षक के व्यावसायिक विकास हेतु आईसीटी की उपादेयता स्वयं सिद्ध है। वर्तमान परिस्थितियों में सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकियों में आश्चर्यजनक प्रगति के साथ की हमारे पास आज सम्प्रेषण तकनीकियों के रूप में कापफी कुछ विविधता उपलब्ध है। प्रस्तुत लेख में शिक्षकों के व्यावसायिक विकास हेतु सूचना एवं सम्प्रेषण माध्यमों, शिक्षक व्यवसाय आदि को प्रकाशित करने का प्रयास किया गया है।

मुख्यबिन्दु - व्यवसाय, शिक्षकव्यवसाय, आई.सी.टी.

आधुनिक परिदृश्य के शिक्षण एक स्थिर व्यवसाय नहीं अपितु देश काल व स्थिति के अनुरूप परिवर्तनशील है। आधुनिक प्रौद्योगिकी, सदैव बदलते ज्ञान, वैश्विक अर्थशास्त्रा व सामाजिक दबावों से प्रभावित होकर बदलता रहता है। परिवर्तनशील समाज में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया व अध्यापन के तरीकों और कौशलों का लगातार अद्यतन विकास आवश्यक है। शिक्षकों को सतत विकास के लिए प्रयत्नशील होना अनिवार्य है।

कोठारी आयोग (1964-66) का बहुचर्चित प्रतिवेदन इस वाक्य से प्रारम्भ होता है कि भारत के भाग्य का निर्माण उसकी कक्षाओं में हो रहा है। इसके गम्भीर शैक्षिक निहितार्थ है। इसी प्रकार नई शिक्षा नीति 1986 में कहा गया है कि शिक्षक का स्तर समाज के सामाजिक, सांस्कृतिक लोकाचार का प्रतिबिम्ब है। विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग (1948-49) ने अभिमत दिया था कि ''हमारे देश के लोग इस बात को मान्यता देने में बहुत धीमे रहे कि शिक्षण एक व्यवसाय है जिसके लिए अन्य व्यवसाय की तरह गहन तैयारी की आवश्यकता है।

शिक्षक व्यावसायिक विकास पर बल देते हुए क्रिस्टोपफर डे (1999) तर्क प्रस्तुत करते हैं कि शिक्षकों के व्यावसायिक विकास को एक जीवन पर्यन्त की गतिविधि के रूप में देखा जाना चाहिए जो उनके निजी और साथ ही व्यावसायिक जीवन पर और कार्यस्थल की नीति और सामाजिक सन्दर्भ पर ध्यान केंद्रित करती है। उसी प्रकार राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा :

ONLINE ISSN: 2582-0095 **Impact Factor : 5.016**

Gyanshauryam
International Scientific Refereed Research Journal

website : www.gisrrj.com

Certificate of Publication

Ref : SHISRRJ/Certificate/Volume 4/Issue 3/230 30-Jun-2021

This is to certify that the research paper entitled

समकालीन परिस्थितियों में शांति शिक्षा में उपकरण के रूप में योग

डा. भारती कौशल

सहायकाचार्या (अतिथि), श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली,भारत।

After review is found suitable and has been published in the Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal(GISRRJ), Volume 4, Issue 3, May-June 2021. [Page No : 35-40]

This Paper can be downloaded from the following GISRRJ website link

http://gisrrj.com/GISRRJ21337

GISRRJ Team wishes all the best for bright future

Peer Reviewed and Refereed International Journal

Editor in Chief
Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal

Associate Editor
GISRRJ

Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 GISRRJ | Volume 4 | Issue 3 | ISSN : 2582-0095

समकालीन परिस्थितियों में शांति शिक्षा में उपकरण के रूप में योग

डा. भारती कौशल
सहायकाचार्या (अतिथि),
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय,
नई दिल्ली, भारत।

Article Info
Volume 4 Issue 3
Page Number : 35-40

Publication Issue :
May-June-2021

Article History
Accepted : 15 June 2021
Published : 30 June 2021

सारांश– वर्तमानकालिक जीवन अपने सभी पहलुओं में अधिकाधिक हिंसा और संघर्षों से ग्रस्त होता जा रहा है, वहाँ दूसरी ओर संघर्षों को हल करने और प्रतिदिन मानवीय अस्तित्व बनाए रखने में शांति प्राप्त करने हेतु बढ़ती चिंता विचारणीय विषय है। इस गहन चिंता ने विश्व स्तर पर शांति शिक्षा के अनुप्रयोग में स्वयं की महत्ता को व्यक्त किया है। आज शिक्षा के क्षेत्र में यह अहसास बढ़ रहा है कि बच्चों को शांतिपूर्ण जीवन जीने की कला में शिक्षित किया जाना चाहिए ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि वर्धमानिक पीढ़ी शांति के मूल्य को आत्मसात करे ताकि उभरती विश्व व्यवस्था शांति की संस्कृति पर आधारित हो। चूंकि समाज में शांति मानव मनस के भीतर शांति की अभिव्यक्ति है, इसलिए उचित साधनों को अपनाकर आंतरिक शांति का पोषण करना महत्वपूर्ण है। कई अभ्यासकर्ताओं द्वारा यह बताया गया है कि योग आंतरिक शांति उत्पन्न करने में प्रभावी है। इसी तथ्यात्मक पहलू पर दृष्टिपात डालने का प्रयास प्रस्तुत पत्र के माध्यम से किया गया है।

मुख्य बिन्दु : शांति शिक्षा, मानव मनस, योग।

परिचय – सम्प्रति शांति शिक्षा को व्यक्तिगत ,पारिवारिक, सामाजिक,सांस्कृतिक तथा वैश्विक रूप से अपनाने की जरूरत है। शांतिपूर्ण मनोभावों के साथ जीवन जीने के लिए व्यक्ति का निर्माण करना ही शांति शिक्षा का मुख्य उद्देश्य है । जीवन में आज यह अहसास बढ़ता जा रहा है कि बच्चों को शांतिपूर्ण जीवन जीने की कला सिखाई जानी चाहिए। यह एक सार्वभौमिक रूप से साझा दृष्टिकोण है कि हम एक विकसित दुनिया के बीच आतंकवाद, युद्ध, अपराध, अन्याय, उत्पीड़न और शोषण के रूप में अभूतपूर्व हिंसा के युग में रह रहे हैं, जो संपन्नता और भौतिक बहुतायत से चिह्नित है, जिसे कुछ लोगों ने प्रसन्नता से अपना लिया है। बच्चे स्वाभाविक रूप से हिंसा की भावना को आत्मसात कर लेते हैं, जो पूरे सामाजिक, सांस्कृतिक ताने–बाने को घेर लेती है और जल्द ही यह हिंसा के अगली पीढ़ी में अपराधी प्रवृत्ति रूप में नजर आएगी । इस तरह की आपदा

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

ISSN No : 2581-6306
website : http://shisrrj.com
Impact Factor : 5.239

Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal

Certificate of Publication

Ref : SHISRRJ/Certificate/Volume 3/Issue 4/426

20-Jul-2020

This is to certify that the research paper entitled

शिक्षकों के व्यावसायिक विकास संवर्धन हेतु क्रियात्मक अनुसंधान की उपादेयता

डा.भारती कौशल

सहायकाचार्या (अतिथि), श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, भारत।

After review is found suitable and has been published in the Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal(SHISRRJ), Volume 3, Issue 4, July-August 2020. [Page No : 52-56]

This Paper can be downloaded from the following SHISRRJ website link

http://shisrrj.com/SHISRRJ203355

SHISRRJ Team wishes all the best for bright future

Editor in Chief
SHISRRJ

Associate Editor
SHISRRJ

Peer Reviewed and Refereed International Journal

Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 SHISRRJ | Volume 3 | Issue 4 | ISSN : 2581- 6306

शिक्षकों के व्यावसायिक विकास संवर्धन हेतु क्रियात्मक अनुसंधान की उपादेयता

डा.भारती कौशल
सहायकाचार्या (अतिथि), श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, भारत।

सारांश – शिक्षा के बदलते परिदृश्यमेंजहाँशिक्षकों के द्वारास्व-व्यावसायिक संवर्धन हेतु अनेक उपागमों का अनुसरण किया जा रहा है वहाँ क्रियात्मक अनुसंधान परिस्थितिजन्यतात्कालिक समस्याओं के समाधान हेतु एक उभरते उपागम के रूप में सामने आ रहा है। क्रियात्मक अनुसंधान एक ऐसी प्रक्रिया है जो न केवल शिक्षकों को व्यावसायिक रूप से दक्ष बनाने में समर्थ है अपितु इसकेद्वाराशिक्षक शिक्षण अधिगम के दौरान अपनी समस्याओं का वैज्ञानिक रूप से समाधान करने का प्रयास करते हैं। यह शिक्षक को उसके द्वारा किए जाने वाली क्रियाओं के लिए निर्णयोंके मूल्यांकन में पथ प्रदर्शक है।प्रस्तुत पत्र में क्रियात्मक अनुसंधान के संक्षिप्तउद्गम परिचय, क्रियात्मक अनुसंधान के उद्देश्य, सोपान एवं शिक्षकों के लिए व्यावसायिक विकास संवर्धन के सन्दर्भमेंक्रियात्मक अनुसंधान की महत्ता पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

मुख्य बिंदु - क्रियात्मक अनुसंधान, व्यावसायिक विकास संवर्धन

वर्तमान युग में जहाँ विद्यार्थियों के शैक्षिक स्तर को उन्नत बनाने हेतु नवाचारी तकनीक व प्रविधियों का उद्गम हुआ है वही शिक्षण अधिगम प्रक्रिया जटिल होती जा रही हैक्योंकि शिक्षण के दौरान शिक्षकों को अनेक शिक्षा से जुड़ी सैद्धांतिक व व्यवहारिक समस्याओं का समाधान करना पड़ता है।आज के युग में शिक्षा मानव जीवन का अभिन्न अंग बन गई है ।शिक्षा मानव को समाज के लिए उत्पादक ,उपयोगी तथा सुसंस्कृत सदस्य बनाकर महत्वपूर्ण योगदान देती है।अतःव्यक्ति, समाज व राष्ट्रकी बढ़ती आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षा व शिक्षण प्रक्रिया को बनाए रखने तथा शिक्षकों को अपनी व्यावसायिक दक्षता के लिए निरंतर अनुसंधान की आवश्यकता है। शिक्षा जगतमें नवीन तथ्यों ,सत्य व सिद्धांतों की खोज हेतु मौलिक अनुसंधान किए जा रहे हैं वहीं दूसरी तरफ शिक्षा की तात्कालिक समस्याओं के समाधान हेतु क्रियात्मक अनुसंधान अत्यधिक सहायक सिद्ध हुआ है। शिक्षा व्यवस्था में आ रहे नवीन परिवर्तनों का प्रभाव शिक्षा प्रक्रिया पर पड़ रहा है इस कारण कक्षाव विद्यालय में बढ़ती जटिलताओं के कारण अध्यापकों को नवीन समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है ।क्रियात्मक अनुसंधान के द्वारा शैक्षणिक समस्याओं का समाधान ढूंढने का प्रयास किया जाता हैसाथहीकक्षा व विद्यालय की कार्य- पद्धति में सुधार के साथ शिक्षक अपनी व्यवसाय कुशलताओं को और बेहतर बना सकता है।

क्रियात्मक अनुसंधान

क्रियात्मक अनुसंधान का अर्थ एक वैज्ञानिक खोज से है जो शिक्षा के व्यावहारिक पहलुओं व तात्कालिक समाधान से संबंधित है इसमें विद्यार्थियों, शिक्षकों ,विद्यालयों और शैक्षिक प्रशासकों की दिन प्रतिदिन की गतिविधियों में आने वाली विभिन्न समस्याओं के समाधान के लिए वैज्ञानिक खोज है। **स्टीफनएम. L**कोरे के शब्दों में क्रियात्मक अनुसंधान एक ऐसा अध्ययन है जिसे कोई व्यक्ति अपने ही काम को अधिक अच्छे ढंग से करने के लिए करता है यथा एक शिक्षक का अपने शिक्षण कार्य को अधिक प्रभावशाली बनाने के उद्देश्य से तथा विद्यालय प्रशासक का अपने प्रशासन को अधिक सुदृढ़ बनाने के लिए किया गया अध्ययनहै।

ISSN 2454-1230

चतुर्दशोऽङ्कः, XIVth Issue

जुलाई-दिसम्बर, 2021

July-December 2021

शिक्षाप्रियदर्शिनी

अन्ताराष्ट्रिया समकक्षव्यक्ति-समीक्षिता

बहुभाषी-षाण्मासिक-शोधपत्रिका

SHIKSHA PRIYADARSHINI

(An International Peer-Reviewed Multi-Lingual)

Half-Yearly Research Journal)

मुख्यसंरक्षकः

प्रो. श्रीनिवासः वरखेडी

प्रधानसम्पादकः

प्रो. चांदकिरणसलूजा

प्रबन्धसम्पादकः

प्रो. पवनकुमारः

- [illegible]
  ISSN : [illegible]
  [illegible], 2021
  [illegible]

- [illegible]
  [illegible],
  [illegible],
  बाड़ी, [illegible] धौलपुरम्, [illegible] - 328021
- संस्थानस्य जालपुटम् - www.[illegible].in
- पत्रिकायाः जालपुटम् (website)-www.shikshapriyadarshini.com
- सम्पर्कसूत्रम् - +91-8905479855, 09529208751, [illegible]
- अणु-सङ्केतः कार्यालयः:- shikshapriyadarshini777@gmail.com
- लेखप्रासये अणु-सङ्केतः - shikshapatrika@gmail.com
- सहयोगराशिः- लेखकाय तल्लेखान्वितोऽङ्कः निःशुल्कं प्रदास्यते ।
- इयं पत्रिका उभयथा अध्येतुं शक्यते Online & Offline

- संस्थागतसदस्यताशुल्कम् - प्रत्यङ्कम् ६००रू, वार्षिकम् १,२०० रू., द्विवार्षिकम् २२०० रू.,
  चतुःवार्षिकम् ४२०० रू, पञ्चवार्षिकम् ५००० रू. ।
  A/C Name : Sanskrit sanskriti vikas sansthan ,Bari
  A/C No: 45640200000541, IFSC CODE : BARBOBADIXX

- मुद्रणम् - Shivalik Prakashan, 4648/21, Ansari Road, Daraya Ganj, NEW DELHI - 110002

सूचना:

- पत्रिकायाः समस्तपदाधिकारिणः अवैतनिकाः सन्ति ।
- लेखस्य / शोधपत्रस्य समस्त उत्तरदायित्वं लेखकस्यैव अस्ति ।
- कस्यापि विवादस्य न्यायिकक्षेत्रं तहसीलबाड़ी-धौलपुरम् (राजस्थानम्) भविष्यति ।

शिक्षाप्रियदर्शिनी (अङ्कः 14)

अनुक्रमणिका

धान सम्पादकीय

बन्ध सम्पादकीय viii

ष्ट्रियशिक्षानीतिः 2020 ix

ो. चान्दकिरण सलूजा 1

राष्ट्रियशिक्षानीतिः 2020' सन्दर्भे संस्कृतविश्वविद्यालयेषु बहुविषयकतायाः क्रियान्वयनोपायाः 6

ो. सन्तोषमित्तलः

National Education Policy 2020: Inclusive Classroom Environment and Constructivist Learning Approach 12

Prof. Rachna Verma Mohan

राष्ट्रीय शिक्षानीति 2020 के सन्दर्भ में अध्यापक शिक्षा 21

डा. प्रकाश चन्द्र पन्त 'दीप'

नई शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में भारतीय शिक्षा एवं डॉ. एस. राधाकृष्णन 32

डा. सुरेंद्र महतो

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षक की संकल्पना 36

डा. दयानिधि शर्मा

शैक्षिक तकनीकी के प्रोन्नयन के लिए राष्ट्रीय शिक्षा निति-2020, के दिशानिर्देश 43

डा. सुनील कुमार शर्मा

NEP 2020 : Core Spirit and its Objectives 55

Dr. Jitender Kumar

राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 की दार्शनिक पृष्ठभूमि 67

डा. नितिन कुमार जैन

0. नवराष्ट्रियशिक्षानीतेः परिप्रेक्ष्ये संस्कृतशिक्षा 74

डा. मनीषजुगरान:

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 के परिप्रेक्ष्य में पाठ्यचर्यागत परिवर्तन 81

डा. अजय कुमार

12. पूर्व-प्राथमिक शिक्षा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 93

डा. अनूपकुमार पाण्डेय

13. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के सन्दर्भ में शैक्षिक एवं प्रशासनिक संस्थाओं का पुनर्निर्माण 104

डा. रेखा शर्मा

14. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के सन्दर्भ में भाषा शिक्षा 115

डा. भारती कौशल

शिक्षाप्रियदर्शिनी
(अन्ताराष्ट्रिया समकक्षव्यक्ति-समीक्षिता बहुभाषीयशोधपत्रिका)
चतुर्दशोऽङ्कः, जुलाई-दिसम्बर, 2021
ISSN : 2454-1230

14.

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के सन्दर्भ में भाषा शिक्षा

डॉ. भारती कौशल
सहायकाचार्य (अतिथि अध्यापिका)
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

सार

राष्ट्र के नवोन्नयन हेतु किसी भी राज्य की शिक्षा नीति उसकी मूलभूत आवश्यकता होती है। जिसमें अतीत का विश्लेषण , वर्तमान की आवश्यकता तथा भविष्य की संभावनाएं निहित होती है ।भारत सरकार द्वारा शिक्षा के विकास एवं संवर्धन हेतु काफी अंतराल के बाद राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की घोषणा की गई जिसमें शिक्षा को सरल सुगम बनाने पर बल दिया है। यह राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 नव भारत निर्माण में मील का पत्थर साबित होगी । यह शिक्षा नीति ज्ञान -विज्ञान ,अनुसंधान नवाचार, प्रौद्योगिकी से युक्त, संस्कार सक्षम व मूल्यपरक है इसके साथ ही शिक्षा नीति में भाषा पर विशेष बल दिया गया है। अध्ययन अध्यापन की प्रक्रिया में भाषा का विशेष महत्व होता है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था अंग्रेजी के वर्चस्व को बढ़ावा देती है जिससे कहीं ना कहीं बालकों का व्यक्तित्व विकास बाधित होता है और सीखने की गति अवरुद्ध होती है। अतः इस नीति के अंतर्गत एक भारत- श्रेष्ठ भारत पहल के तहत इसमें संस्कृत साहित्य व अन्य भारतीय भाषाओं को भी स्थान दिया गया । राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भाषाई विविधता को बढ़ावा और संरक्षण देने की बात की गई है। इसलिए अध्ययन अध्यापन में भाषा की महत्ता को स्वीकारते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में वर्णित भाषा शिक्षा संबंधी महत्वपूर्ण बिंदुओं पर दृष्टिपात करने का प्रयास किया गया है । पुरुषोत्तम दास टंडन ने कहा भी है "भाषा ही राष्ट्र का जीवन है।"

मुख्य बिन्दु – राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, भाषा , बहुभाषिकता

संपूर्ण जीवमंडल में मानव को ही भाषा का अमूल्य वरदान ईश्वर से मिला है । भाषा एक मानवीय कलाकृति के रूप में है। जो मानव के विचार अभिव्यक्ति का सर्वश्रेष्ठ साधन है। भाषा शिक्षा का आधार है। भारत एक ऐसा देश है जिसमें न केवल सांस्कृतिक बल्कि भाषाई विविधता देखने को मिलती है। भारत में शिक्षा का माध्यम सदैव एक ज्वलंत विषय है क्योंकि बालकों के सर्वांगीण विकास के संदर्भ में संपूर्णावलोकन किया जाए तो पाएंगे कि कहीं न कहीं बालकों में भाषा के अभाव में आंतरिक अक्षमता, शैक्षिक व मानसिक आदि विकास किसी न किसी रूप में बाधित होते रहे हैं। अतः राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का मुख्य मुद्दा रहा शिक्षा का माध्यम । देश की भाषाई विविधता को देखते हुए शिक्षा नीति में मुख्य रूप से राज्य सरकारों द्वारा जहाँ तक संभव हो राज्य बोले जाने वाली भाषाओं में शिक्षा दिए जाने की सिफारिश की गई। जहाँ तक संभव हो शिक्षा के माध्यम के रूप में पांचवी कक्षा तक मातृभाषा/घर की भाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा का प्रयोग किया जाए।

ISSN 2394-5303

Peer Reviewed International Multilingual Research Journal

Printing Area

Issue-78, Vol-02, July 2021

Editor

Dr.Bapu G.Gholap

INDEX

01) Opportunities and challenges for E-Commerce in the times of Covid-19
Prof.Dr.Nilakanth Ekanath Bhangale, Bhusawal ||10

02) Women's Educational Status in Pre - Independence India
Dr. Bharati Kaushal, New Delhi ||15

03) Bharati Mukherjee's 'Wife': An Exploration of Cross-cultural elements, ...
Mr. Bhendekar Vithal Digamber, Nanded (Maharashtra) ||18

04) Role of Library in Enhancing Education Quality
Prof. Ravi Kishanrao Chavan, Latur ||22

05) The Context of the Indian Cinema in Pre independence India
Dr. Rajvirendrasing Rubji Gavit, Dhule ||23

06) Information Technology Skills for E-Learning A Study of Selected Social ...
Dr.Milind B. Ghangare, Wardha, Maharashtra, India ||27

07) DHAMMAPADA: THE PERFECT MAP FOR THE SPIRITUAL JOURNEY
Mr. Vishal Ingle, Jalna ||29

08) Peoples Democratic Party as an Alternative to National Conference: A ...
JAMEELUN NISA, Jammu ||31

09) Din Dayalu Sharma and the Sanatana Dharma Movement in the Punjab, ...
Jaswinder Singh, Amritsar ||37

10) Santiago: The quest for Life in 'The Old man and the Sea' and 'The ...
Subodh Kishor Kshetre, Ahmednagar, Maharashtra ||44

11) A Study of Self- Esteem among College Students
More Tukaram Suryabhanrao & M.G.Shinde, Aurangabad ||48

12) Poerty the image of life: A Review
Dr.Sasane S.S., Beed ||53

13) Dr. Babasaheb Ambedkar give same Rules and Right to Muslim Minority ...
Principal Dr. Shaikh S. J., Dist. Jalgaon, Maharashtra ||56

02

Women's Educational Status in Pre - Independence India

Dr. Bharati Kaushal
Assistant Professor (Guest),
Shri Lal Bahadur Shastri National Sanskrit University, New Delhi

Abstract

Education plays a very important part in a person's life. It affects the social development of a person, how they interact and make decisions in life. Before India got independence, the educational status of women was in a pitiful state with efforts going on to create awareness in the society and empower the women of this country by allowing them to get educated. This paper is an effort in understanding the ancient Indian education system starting with the vedic age and trying to identify what led to the decline of the educational status of women and what were the efforts made to revive the status before India got its independence.

Keywords: Vedic era, Early Medieval era, Medieval, British Rule, education, women

Introduction

Indian Civilization is different from other old civilizations of the world. Most of the known civilizations show that the further we delve into the history of other civilizations, the more unsatisfactory is the position of women in the society whereas Indian civilization is unique in this respect. The more we go back in the antiquity of Indian civilization, the more satisfactory we found the status of women in many fields, especially in education.

Indian history goes back to thousands of years and data of some subsequent centuries is insufficient or incomplete. Therefore, we will look through the data in subsequent periods, starting from vedic age, early medieval age, medieval age to modern period till Independence of India.

Women education during Vedic Era

During the vedic era girls would marry after attaining the age of 16. The unmarried period was utilised for educating them. During the vedic period women were eligible for studying vedas and participating in various vedic and other religious rituals. Vedic studies are initiated by undergoing the ritual of upanayana, which was as common for girls as it was for boys. As mentioned in the Atharvaveda, the initiation ceremony was followed by a period of brahmacharya which was essential for securing a suitable match for marriage.

"brahmacaryeG?a kanyâ yuvânaC?vindate patim" I XI, 5, 18.

"A young daughter after the observance of brahmacharya should be married to a young man"

Names of many learned lady poets are mentioned in the Sarvânukramanika. Lopamudrâ, Viúvavârâ, Sikatâ Nivavari and Ghosha are credited to be the composer of Rigveda 1.179, V. 28. VIII. 91, IX. 81.11-20, and X. 39, and 40 hymns respectively. Some lady scholars such as Sulabha Maitreyi, Vadavâ Prachiteyi, and Gärgi Vachaknavi (As. G. S., III, 4, 4) were paid tribute of respect by daily remembrance at the time of brahmayajña.

Generally female students pursued education till they get married, usually at the age of 15 or 16. They were taught important Vedic hymns prescribed for the daily prayers or rituals to be performed after the marriage. Musical hymns of samaveda and dancing were also part of their curriculum. There were some lady scholars known as Brahmvâdinîs who used to pursue their education and get excelled in the scholarships before they got married. They were great scholars of vedic philosophies. With